CHAPTER 25

HINDI

Doctoral Theses

199. अग्रवाल (मोनिका)

मतिराम और पद्माकर के शृगांर-वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशिका : डॉ. नीलम सक्सैना

Th 16349

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के मूल वर्ण्य-विषय के विवेचन की आधारभूमि रूप में रस के स्वरूप, संख्या, उसके विविध अर्थों, प्रत्यक्षानुभूति से उसके संबंध तथा रस के वैशिष्ट्य का उल्लेख किया गया है । मतिराम और पद्माकर के जीवन-वृत्त के संबंध में अब तक की प्रकाशित सामग्री तथा उपलब्ध तथ्यों के आलोक में उनके जीवन-वृत्त को क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया गया है । आलंबन विभाव और उसके भेद तथा महत्त्व पर शास्त्रीय एवं मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में विस्तार से चर्चा की गई है । उद्दीपन विभाव का स्वरूप विश्लेषित करते हुए इसकी परिसीमा में आने वाले उपकरणों पर विचार किया गया है । अनुभावों का स्वरूप विवेचन करने के उपरांत इनके भेदों-उपभेदों पर विचार हुआ है, तदुपरान्त मतिराम और पद्माकर की अनुभाव-योजना पर प्रकाश डाला गया है । काव्यगत प्रवृत्ति के आलोक में दोनों कवियों की शृंगार -विषयक दृष्टि तथा वैशिष्ट्य को विभिन्न छवियों द्वारा प्रतिबिम्बित किया गया है । वियोग शृंगार पर आधारित हृदय की विविध स्थितियों की विवृति मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में हुई है । मतिराम और पद्माकर के शृंगार-वर्णन का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर किए गए कार्य से प्राप्त स्थापनाओं, उपलब्धियों, विशिष्टताओं और महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों की ओर संकेत किया गया है ।

विषय सूची

1. रस : स्वरूप और विश्लेषण 2. मतिराम और पद्माकर का जीवन-वृत्त एवं

कृतित्व 3. आलंबन विभाव तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 4. उद्दीपन विभाव तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 5. अनुभाव तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 6. संचारी भाव तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 7. संयोग शृंगार तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 8. वियोग शृंगार तथा मतिराम और पद्माकर का काव्य 9. उपसंहार । ग्रंथानुक्रमणिका।

200. अमिताभ कुमार

लोकजागरण की अवधारणा और तुलसीदास का काव्य ।

निर्देशक : प्रों. अजय तिवारी

Th 16350

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में लोकजागरण की स्थितियों और उसके विाकस के कारणों पर विचार किया गया है । लोकजागरण की शुरूआत जाति के विकास के साथ होती है। साथ ही जनभाषा के विकास से भी इस प्रक्रिया का अंतर्संबंध है । इसमें मध्ययुगीन साहित्य की परंपरा में लोकजागरण की स्थिति दिखाई गयी है । मध्ययुग में लोकजागरण के साथ सामंतवादी मानसिकता, ढांचा, व्यवहार की नयी विकसित चेतना के साथ द्वन्द्व प्रारंभ होता है । इसमें तुलसीदास के कृतित्व का विश्लेषणात्मक परिचय प्रस्तुत किया गया है । तुलसीदास के कृतितव में लोकजागरण के तत्वों की पड़ताल की गयी है । घोर उत्पीड़न के युग में तुलसीदास का भारतीय साहित्य क्षेत्र में पदार्पण हुआ । तुलसीदास उपने युग से गहरे तक जुड़े रचनाकार थे । इस शोध में कलात्मक ढांचे पर लोकजागरण के प्रभाव को दिखया गया है। इससे अनुभव की जटिलताओं के साथ प्रबंधात्मक विवेक के बिखरने का सूत्र प्राप्त होता है । साथ ही चरित्रों के अंतर्विरोध और भाषा संगठन पर भी विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. लोकजागरण की अवधारणा और प्रेरणा 2. मध्ययुगीन साहित्य की परंपरा और लोकजागरण 3. तुलसीदास का कृतित्व : विश्लेषणात्मक परिचय 4. तुलसीदास के कृतित्व में लोकजागरण के तत्व 5. कलात्मक ढाँचे पर लोकजागरण का प्रभाव 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

201. अश्वनी कुमार

दलित साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रिकाओं का योगदान ।

निर्देशक : डॉ. प्रेमसिंह

Th 16360

सारांश

दलित साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रिकाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । दलित साहित्य को हिन्दी पत्रिकाएं छिट-पुट रूप में प्रकाशित करती रही हैं । प्रस्ततु शोध प्रबंध पत्रिकाओं के दलित साहित्य विशेषांक को केन्द्र में रखकर व उनके योगदान के द्वारा दलित साहित्य को समझने की कोशिश है । इन हिन्दी पत्रिकाओं में गैर-दलित व दलित साहित्यकारों द्वारा प्रकाशित दलित साहित्य विशेषांक प्रमुख रहे हैं । दलित साहित्य चाहे वह मराठी का हो या हिन्दी व हिन्दीत्तर हिन्दी पत्रिकाओं ने ही सबसे पहले प्रारंभिक रूप में सामने लाये हैं । दलित साहित्य को सर्वप्रथम विशेषांक रूप में प्रकाशित करने में 'चाँद' के अलावा सारिका, संचेतना, युद्धरत आम आदमी, नया मानदण्ड, उत्तर प्रदेश, दलित वार्षिक, अपेक्षा पत्रिकाओं ने दलित साहित्य को सबसे ज्यादा प्रमुखता से प्रकाशित किया है। शोध प्रबंध में दलित साहित्य की अवधारणा और विकास तथा दलित साहित्य दर्शन पर प्रकाश डाला गया है । इसमें हिन्दी पत्रिकाएं और दलित साहित्य की विवेचना की गई है । शोध प्रबंध में पत्रिकाओं के दलित साहित्य विशेषांक का दलित-विमर्श पर प्रकाश डाला गया है । दलित साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रिकाओं के योगदान को निष्कर्ष रूप में दिया गया है ।

विषय सूची

1. दलित साहित्य : अवधारणा और विकास 2. दलित साहित्य का दर्शन 3. हिन्दी पत्रिकाएं और दलित साहित्य 4. हिन्दी पत्रिकाओं (दलित साहित्य विशेषांक) का दलित विमर्श 5. उपसंहार । ग्रंथानुक्रमणिका।

202. कंचन

उत्तर आधुनिकता की अवधारणा और हिन्दी नाटक ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

Th 16364

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिन्दी नाटकों में उत्तर आधुनिक चेतना के विविध आयामों को नए दृष्टिकोण से देखने व समझने की कोशिश की गई है तथा उत्तर आधुनिक युग द्वारा नाट्कीय संरचना पर पड़ने वाले अनेक पहलुओं को विवेचित किया गया है। शोध प्रबंध में उत्तर आधुनिकता के अर्थ एवं स्वरूप को जानने-समझने का प्रयास किया गया है । उत्तर आधुनिकता को समझने के लिए उत्तर आधुनिक आंदोलन के विभिन्न चरणों का अध्ययन किया गया है ं इसके पश्चात् उत्तर आधुनिकता से सम्बन्धित सात प्रमुख विद्वानों डेनियल बेल, ल्योतार, मार्शल मैक्लुहान, टैरी ईगलअन, फ्रेडरिक जमसन, देरिदा, तथा बौद्रीआ के विचारों का विश्लेषण किया गया है । तत्पश्चत् उत्तर आधुनिक व्याख्याओं पर समग्र विचार प्रस्तुत किया गया है । उत्तर आधुनिक युग की मुख्य प्रवृत्तियां इतिहास का अंत, मुक्त बाजार, ज्ञान और सूचना, बहुलतावाद, महावृत्तांतों का लोप, भाषा चिंतन और पाठ को विस्तार से विवेचित किया गया है । हिन्दी साहित्य में उत्तर आधुनिकता की स्थिति और उसके लक्षणों को स्पष्ट करते हुए, हिन्दी साहित्य की मुख्य विधाओं कहानी, कविता, नाटक और उपन्यास में उत्तर आधुनिकता की उपस्थिति जानने का प्रयास किया गया है। इसमें हिन्दी साहित्य और भूमंडलीकरण के अंतर्संबंध को स्पष्ट किया गया है । साथ ही उत्तर आधुनिक युग में उठे विमर्शों बाज़ारवाद, हाशियों का उभार- स्त्री चेतना, दलित चेतना, अल्पसंख्यक आदिवासी समुदाय चेतना, पर्यावरण चेतना को विस्तार से विवेचित करते हुए हिन्दी नाटकों में इनकी उपस्थिति प्रस्तुत की गई है ।

विषय सूची

1. उत्तर आधुनिकता की अवधारणा : विभिन्न दृष्टियाँ 2. हिन्दी साहित्य में प्रतिबिम्बित उत्तर आधुनिक प्रवृत्तियाँ 3. हिन्दी साहित्य की विविध विधाएँ और उत्तर आधुनिकता 4. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक और उत्तर आधुनिक विमर्श 5. हिन्दी नाटकों में व्यक्त उत्तर आधुनिकतावादी मूल्य 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

203. गुप्ता (सुजाता)
शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में सामाजिक-यथार्थ ।
निर्देशक : डॉ. सुरेश सी. शर्मा
Th 16361

सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक यर्थाथ का निरीक्षण तथा मूल्यांकन विभिन्न स्तरों पर किया गया है । समाजशास्त्रीय तथा साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में समाज का अर्थ, आशय तथा परिभाषिक रूप का विवेचन किया गया है । सामाजिक चेतना और समाजिक यथार्थ का पारस्परिक संबंध बताते हुए साहित्य और समाज, साहित्य और राजनीति, साहित्य और धर्म, साहित्य और संस्कृति, व्यक्ति और समाज पर प्रकाश डाला गया है । समाज और साहित्य का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, साहित्यकार और उसका परिवेश, समाज एक विकासात्मक प्रक्रिया है जिसमें समाज के साथ-साथ परिवर्तन होता रहता है । इसके अंतर्गत समाज के बदलते हुए स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है । साथ ही यथार्थ का दार्शनिक तथा साहित्यिक परिपेक्ष्य में अध्ययन किया गया है । यथार्थ का अर्थ, आशय, परिभाषा तथा उसके विविध रूप यथार्थवाद, प्राकृतवाद, मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद, समाजवादी यथार्थवाद को रेखांकित क्या गया है जो शैलेश मटियानी के कथा-सहित्य में सामाजिक यथार्थ को समझने की दृष्टि देता है। इसमे शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने वाले सामाजिक परिवेश को, ग्रामीण, महानगरी जीवन तथा अंचल विशेष के सामाजिक परिवेश के संदर्भ में रेखांकित किया गया है । शैलेश मटियानी के आंचलिक कथा-साहित्य में सामाजिक यथार्थ के अंतर्गत आंचलिक का अर्थ, विकास, लोकसंस्कृति, लोकगीत, लोक नृत्य, लोक धर्म, लोकपर्व, अंधविश्वास तथा रूढ़ियों का खण्डन, राजनैतिक चेतना, भ्रष्टाचार का विरोध, सामजिक संबंधों का स्वरूप, सामाजिक संस्कार, रीति-रिवाज, सामाजिक तथा आर्थिक विषमतायें और विसंगतियों का यथार्थ, प्राचीन नैतिक धारणाओं में अनास्था, बदलते परिवेश तथा संस्कृति आदि को रेखांकित किया गया है। शैलेश मटियानी जी के कथा-साहित्य में संबंधों के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। इसके अंतर्गत नये संबंधों की तलाश, विवाहोत्तर संबंध, परिवारिक संबंधों का स्वरूप, दाम्पत्य संबंधों की नई नैतिकता, अन्तर्जातीय विवाह के प्रति समाज का दृष्टिकोण आदि का विवेचन किया गया है। शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में नारी-जीवन के यथार्थ का विवेचन किया गया है। इसके अंतर्गत नारी स्वातन्त्र्य, नारी संत्रास, नारी शिक्षा, नारी के प्रति पुरूष की दोहरी मानसिकता, नारी तथा आर्थिक निर्भरता वेश्याओं के जीवन के सामजिक-यथार्थ आदि पर प्रकाश डाला गया है।

विषय सूची

1. (खण्ड क) समाज का समाजशास्त्रीय तथा साहित्यिक परिप्रेक्ष्य, (खण्ड ख) यथार्थवाद का सैद्धान्तिक अध्ययन-दार्शनिक तथा साहित्यिक प्ररिपेक्ष्य में 2. शैलेश मटियानी : व्यक्तितव-कृतित्व 3. शैलेश मटियानी के आंचलिक कथा साहित्य में सामाजिक यथार्थ 4. शैलेश मटियानी के कथा-साहित्य में सामाजिक परिवेशीय यथार्थ 5. शैलेश मटियानी के कथा साहित्य में संबंधों का स्वरूप 6. शैलेश मटियानी : के कथा साहित्य में नारी जीवन का यथार्थ 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

204. गौड़ (अर्चना)

हिन्दी की संयुक्त क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन : श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों के संदर्भ में ।

निर्देशक : डॉ. मोहन

Th 16347

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में हिन्दी क्रियाएँ और उसके भेद पर प्रकाश डाला गया है । इसमे संयुक्त क्रिया के स्वरूप को निर्धारित कर उसकी पद्धति को व्याख्यायित किया गया है । इसमें संयुक्त क्रिया के अर्थ को परिभाषित कर विभन्न विद्वानों, भाषाविदों द्वारा व्याख्यायित एवं परिभाषित संयुक्त क्रिया संबंधी स्वरूप तथा अवधारणा पक्ष का विवेचन एवं विश्लेषण किया गया है । संयुक्त क्रिया पर विभिन्न भाषाविदों द्वारा किया गया वर्गीकरण, उसके पश्चात् उनका विश्लेषण किया गया है । श्रीलाल शुक्त के उपन्यासों में से उदाहरणों को उद्धृत किया गया है जिससे वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट किया जा सके तथा सही अर्थ की पुष्टि भी की गई है । इसमें भारतीय संदर्भ में अर्थविज्ञान का स्वरूप एवं परिभाषा को व्याख्यायित किया गया है । इसके अंतर्गत वैदिक संदर्भ, पौराणिक संदर्भ, व्याकरणिक संदर्भ में अर्थ का महत्व बताया गया है।

विषय सूची

1. हिन्दी क्रियाएँ और उसके भेद 2. संयुक्त क्रिया का स्वरूप और अवधारणा 3. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में संयुक्त क्रियाओं की संरचना 4. संयुक्त क्रियाओ के

भेद 5. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में निहित संयुक्त क्रियाओं का अर्थपरक अध्ययन 6. उपसंहार । परिशिष्ट ।

205. चौहान (मीनाक्षी)

भारतीय नवजागरण के परिप्रेक्ष्य में दिनकर का काव्य ।

निर्देशक : डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल

Th 16525

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में नवजागरण के स्वरूप-निर्धारण के साथ-साथ उसके समग्र विकास को भी रेखांकित किया गया है । तदनन्तर भारतीय नवजागरण के उद्‌भव और विकास का विहंगावलोकन किया गया है । दिनकर के भारतीय नवजागरण संबंधी इस गहन चिंतन का भी विश्लेषण और मूल्यांकन किया गया है और साथ ही उन सीमाओं का रेखांकन भी किया गया है । दिनकर के राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य को भारतीय नवजागरण के आलोक में विश्लेषित और मूल्यांकित किए जाने का प्रयत्न है । कोई भी वैचारिक आंदोलन रचनाकार के कथ्य को ही प्रभावित नहीं करता बल्कि जाने-अनजाने उसके शिल्प पर भी उसके प्रभाव देखें जा सकतें है। इन प्रभावों को विश्लेषित और मूल्यांकित किया गया है ।

विषय सूची

1. नवजागरण : स्वरूप और विकास 2. नवजागरण और दिनकर 3. नवजागरण और दिनकर का राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य 4. नवजागरण ओर दिनकर का पुराण-इतिहास-आश्रित काव्य 5. नवजागरण और दिनकर का प्रेम-सौंदर्यपरक काव्य 6. नवजागरण और दिनकर का काव्य-शिल्प 7. उपसंहार ।

206. जैन (राजकुमार)

बीसवीं शताब्दी के राजनीतिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी भाषा का अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 16352

सारांश

हिन्दी भाषा का अध्ययन एक जटिल तथा महत्त्वपूर्ण विषय रहा है । भाषा और राजनीति का बहुत गहरा संबंध है । प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में हिन्दी भाषा के राजनैतिक पक्ष पर कार्य किया गया है । अंग्रेजी दासता के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के संघर्षपूर्ण बलिदान के फलस्वरूप मिले स्वराज तक के इतिहास में हिन्दी भाषा की क्या राजनैतिक स्थिति रही, यह प्रस्तुत शोध में खोजने का प्रयास किया गया है । भाषा के संदर्भ में चार वर्ग हमारे सामने स्पष्ट रूप से उभर कर आये। प्रथम अंग्रेज जो अंग्रेजी को लाद रहे थे; दूसरे, मुस्लिम लीग, अलीगढ़ आंदोलन, 'अन्जुमन-ए-तरक्की उर्दू' इत्यादि जो उर्दू के समर्थक थे; तीसरा पक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेल, नागरी प्राचारिणी सभा इत्यादि का था - जो संस्कृतनिष्ठ हिन्दी का प्रचार-प्रसार चाहते थे तथा चौथे वर्ग में महात्मा गांधी एवं उनके अनुयायी आते हैं जो हिन्दी उर्दू के मूल से बनी हिन्दुस्तानी के समर्थक थे । इस अध्ययन में एक बहुत ही विचारोत्तेजक तथा रोचक तथ्य उभर कर आता है कि भारत को स्वराज दिलाने वाले महात्मा गाँधी को भारत विभाजन तथा भाषा के प्रश्न पर ही केवल असफलता प्राप्त हुई । इसमें भी सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह रहा कि गाँधी जी भाषा के प्रश्न पर अपने कट्टर अनुयायियों तथा साथियों को भी अपने साथ न रख सके । प्रस्तुत शोध प्रबंध में संविधान सभा की कार्यवाही, सदस्यों द्वारा दिये गये भाषणों, संशोधनों इत्यादि पर उद्धरणों सहित विस्तार से चर्चा की गई है । शोघ प्रबंध में विषय की सीमा एवं उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस विषय के राजनीतिक पक्ष की जटिलता को समझने और प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है । विवेचन को प्रामाणिक बनाने के लिए इस अध्ययन से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण विचारकों एवं राजनेताओं के विचारों को विस्तार से उद्धृत किया है ताकि विषय के विभिन्न पक्षों का प्रामाणिक स्पष्टीकरण किया जा सके ।

विषय सूची

1. भारत में ब्रिटिश आगमन के समय हिन्दी की स्थिति 2. भारत में अंग्रेज़ी का प्रवेश 3. हिन्दी-उर्दू बनाम हिंदू-मुस्लिम भाषाई संघर्ष 4. महात्मा गाँधी की भाषा-नीति के अंतर्गत हिन्दी का विकास 5. गाँधी जी एवं हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में टकराव 6. संविधान निर्मात्री सभा में हिन्दी का प्रश्न 7. उपसंहार । परिशिष्ट। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

207. टांक (नरेश कुमार)

रघुवीर सहाय के काव्य में मनुष्य का बिम्ब ।

निर्देशक : डॉ. कुमुद शर्मा

Th 16356

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में समाजिक सांस्कृतिक आयामों की जांच-पड़ताल मावशास्त्र, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र तथा सामजिक-राजनैतिक इतिहास के दृष्टिकोंण से की गई है । इसमें बदलते परिदृश्य में बदलती मनुष्य की अवस्था का अध्ययन उसके सामाजिक-आर्थिक सन्दर्भों में किया गया है । साथ ही मध्यकालीन तथा आधुनिक विचार पद्धतियों द्वारा मनुष्य की अवधारणा को भी समझा गया है । भारतेन्दु युग से लेकर नई कविता तक मनुष्य के रेखाचित्रों का उसके काल-क्रमानुसार विवेचन किया गया है । इसमें रघुवीर सहाय को लेखक, कवि तथा पत्रकार के रूप में समझने की कोशिश की गई है, साथ ही प्रत्येक भूमिका में उनकी मनुष्यता का आकलन उनके जीवन तथा घर परिवार से जुड़े महत्वपूर्ण मसलों पर उनके विचारों से किया गया है । रघुवीर सहाय की कविताओं में अभिव्यक्त स्त्री-पुरूष, बच्चे वृद्ध, राजनेता, दलित मजदूर, युवा आदि अपने समाज की मजबूरियां एवं कठिन जीवन-संघर्षों का प्रतिनिधित्व करते हैं, इनके प्रति सहाय का दृष्टिकोण जिस प्रकार का रहा तथा उन्होंने इन्हें अपनी कविता में क्या स्थान दिया, इन्ही सब चीजों का विवेचन, विश्लेषण किया गया है । राजनीति तथा मनुष्य की सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक तथा असिमतामूलक नज़रिये से इनके अंतर्संबंधों पर प्रकाश डाला गया है एवं भाषा का अभिव्यक्त का प्रश्न मानवीय सारवत्ता के संदर्भ में देखा गया है, जिससे मनुष्य और उसकी संभावना को कई नये आयाम मिलते हैं ।

विषय सूची

1.मनुष्य की अवधारणा और उसके बदलते परिप्रेक्ष्य 2. आधुनिक हिन्दी कविता में मनुष्य : स्वरूप एवं चिंतन 3. रघुवीर सहाय : मनुष्य तथा रचनाकार रूप में 4. रघुवीर सहाय के काव्य में अभिव्यक्त मनुष्य 5. रघुवीर सहाय के मनुष्य-चिंतन से जुडे सरोकार 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

208. तंवर (कृष्णा)

कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के उपन्यासों के नारी पात्र ।

निर्देशिका : डॉ. अनिला सूद

Th 16342

सारांश

नारीवादी विचारकों एवं लेखक-लेखिकाओं ने समानता-स्वतंत्रता और अधिकारों की बात कहकर नारी मुक्ति और नारी-अस्मिता पर केन्द्रित साहित्य रचा । ऐसी परिस्थिति में कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग अपने औपन्यासिक पात्रों के माध्यम से नारी-चेतना का जो स्वरूप प्रस्तुत करती है उसे समझना आवश्यक है । कृष्णा सोबती का साहित्य नवजागरणकालीन परिवेश से संबंधित है तो मृदुला गर्ग का भूमंडलीकरण के बाद के काल से सम्बन्ध रखता है । नारी स्वतंत्रता और समानता को लेकर उठने वाले पुरुष विरोधी तमाम सवालों को नकार कर दोनों लेखिकाएं नारी का एक नए दृष्टिकोण से मूल्यांकन करती है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में नारी विमर्श एवं नारी चेतना को स्पष्ट करते हुए नारी चिंतन की अवधारणा को भारतीय और पाश्चातय दोनों परिप्रेक्ष्यों में स्पष्ट किया गया है । पितृसत्तात्मक व्यवस्था में नारी के शोषण का कारण बनने वाले मूल बिन्दुओं को अध्ययन किया गया है । इसमें प्रेमचंद पूर्व, प्रेमचंदयुगीन, प्रेमचन्दोत्तर और साठोत्तरी उपन्यासों में क्रमशः बदलते नारी के स्वरूप का विस्तृत अध्ययन किया गया है । इसके अन्तर्गत कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग की सृजनात्मक मानसिकता को स्पष्ट करते हुए दोनों लेखिकाओं के प्रमुख पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन है । इसमें कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के नारी पात्रों की भाषिक अभिव्यक्ति का अध्ययन है । नारीवादी लेखिकाओं की नयी स्त्री-भाषा की तलाश के प्रश्न पर प्रकाश डालते हुए कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के भाषा संबंधी विचारों को प्रस्तुत किया गया है ।

विषय सूची

1. नारी विमर्श की पूर्वपीठिका 2. समकालीन नारी चिन्तन 3. हिन्दी उपन्यासों में नारी 4. कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के उपन्यासों के नारी-पात्र 5. कृष्णा सोबती और मृदुला गर्ग के नारी पात्रों की भाषिक अभिव्यक्ति 7. उपसंहार । ग्रन्थानुक्रमणिका।

209. तिवारी (रमेश)

साठोत्तर समाजिक-राजनीतिक परिदृश्य और व्यंग्य-लेखन ।

निर्देशिका : डॉ. रेखा अवस्थी

Th 16367

सारांश

शोध प्रबंध में व्यंग्य की व्युतपत्ति, अभिप्राय, व्यंग्य के बारे में भारतीय-पाश्चात्य विद्वानों के मतों का विश्लेषण किया गया है । व्यंग्य के स्वरूप और व्यंग्य की परंपरा पर भी प्रकाश डाला गया है । इसमें आजादी के मूल्यों का टूटना और मूल्यहीनता का प्रसार, मोहभंग और विक्षोभ, भ्रष्टाचार और राजनीतिक अवसरवाद, सामाजिक विद्रूपताएं और असुरक्षा बोध, असमान और असंतुलित विकास और जनसंघर्ष के नए रूप के अंतर्गत समाज और साहित्य में हो रहे परिवर्तनों और मुख्यतः हिन्दी व्यंग्य के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है । श्रीलाल शुक्ल का परिचय, इनकी व्यंग्य दृष्टि और इनकी रचनाओं का विश्लेषण किया गया है। रचनाओं को तीन उपशीर्षकों उपन्यास, कहानी-संग्रह, निबंध और अन्य व्यंग्य विधाएं, में वर्गीकृत कर विश्लेषण किया गया है । सन् 1960 के बाद भारतीय परिदृश्य में जो परिवर्तन दिखाई पड़ते हैं वे श्रीलाल की रचनाओं में किस प्रकार अभिव्यक्त किए गए हैं यह विश्लेषित किया गया है । सन् साठ के बाद के राजनीतिक परिदृश्य के अंतर्गत राजनीतिक दलों, नेताओं ओर घटनाओं के प्रति श्रीलाल की रचना दृष्टि का विश्लेषण किया गया है । सन् साठ के आस पास से श्रीलाल के समकालीन जो व्यंग्यकार सक्रिय रहे हैं उनके व्यक्तित्व-कृतित्व का तथा आज के सक्रिय व्यंग्यकारों का संक्षिप्त परिचयात्मक विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दी में व्यंग्य लेखन की परंपरा 2. साठोत्तर सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य का स्वरूप 3. श्रीलाल शुक्ल का कथा-साहित्य : व्यंग्य दृष्टि का अध्ययन 4. श्रीलाल शुक्ल के कथा-साहित्य में साठोत्तर समाज के प्रतिरूप 5. साठोतर राजनीति और श्रीलाल शुक्ल की कथा-कृतियां 6. समकालीन व्यंग्य लेखन की परंपरा और श्रीलाल शुक्ल 7. मूल्यांकन । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

210. दीपमाला

कमलेश्वर का कथा-साहित्य : समाज, सत्ता और राजनीति ।

निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

Th 16354

सारांश

समाज, सत्ता और राजनीति मनुष्य द्वारा विकसित ज्ञान की ऐसी शाखाएं हैं जिनमें मानव-जीवन को अधिक व्यवस्थित तथा पूर्ण बनाने की चेष्टा युगों से होती रही है। मानव विकास ही इनका परम लक्ष्य रहा है । मानव जन्म के साथ ही समाज, राष्ट्र और राजनीति का महतवपूर्ण भाग बन जाता है, समाज में रहकर जहां वो पलता-बढ़ता है, अपनी परम्पराएं और संस्कार ग्रहण करता है, वहीं देश की राजनीति ओर सत्ता के उसके जीवन पर पडने वाले नाना प्रकार के प्रभावों से वह अछूता नहीं रह सकता । प्रस्तुत शोध प्रबंध में इसी विचार बिन्दु को आधार बना कमलेश्वर की कहानियों और उपन्यासों में इनकी भिन्न-भिन्न भूमिकाओं को जांचने का प्रयत्न किया गया है। कमलेश्वर के कथा साहित्य में समाज, सत्ता और राजनीति के विभिन्न चेहरों का वास्तविकता के रूप में चित्रण हुआ है । समाज में रहने वाला निम्न वर्ग किस तरह से समाज, सत्ता और राजनीति से ग्रसित है इन तीनों की आपस में भूमिका बन जाने से समाज में आम आदमी अत्यधिक प्रभावित होता है, सत्ता जहां अपने प्रभाव से उसके अस्तित्व को खत्म कर देती है, राजनीति का हस्तक्षेप उसके जीवन जीने के साधन ही छीन लेता है, यह विस्तार से अध्ययन किया गया है । इसमें कमलेश्वर के जीवन-चरित, व्यक्तित्व एवं कृतित्व का अध्ययन किया गया है । इसमें कमलेश्वर की कहानियों का विश्लेषण समाज, सत्ता और राजनीति की दृष्टि से की गई है तथा उनके उपन्यास का विश्लेषण समाज, सत्ता और राजनीति की दृष्टि से किया गया है। शोध प्रबंध कमलेश्वर की कहानियों और उपन्यासों को पाठक वर्ग के समक्ष उसी रूप में चित्रित करने का प्रयास है जिस रूप में कमलेश्वर जी चाहते थे, वे पाठक की सोच विकसित करना चाहते थे शोध के माध्यम से ऐसे ही पहलुओं को विस्तार से चित्रित किया गया है जिससे पाठक वर्ग कमलेश्वर की उस सोच ओर दृष्टि का लाभ उठा सकें और उनकी कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से समाज को, सत्ता को और राजनीति को समझ सकें ।

विषय सूची

1. समाज, सत्ता, राजनीति और साहित्य 2. समाज, सत्ता और राजनीति का आपसी संबंध 3. कमलेश्वर : जीवन-चरित, व्यक्तित्व एवं कृतित्व 4. कमलेश्वर की कहानियां : समाज, सत्ता और राजनीति की दृष्टि से 5.कमलेश्वर की उपन्यासः समाज, सत्ता और राजनीति की दृष्टि से 6. उपसंहार । ग्रंथ सूची ।

211. धनंजय सिंह

लोकधर्मी नाट्य-परंपरा और भिखारी ठाकुर का नाट्य-साहित्य ।

निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

Th 16351

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में लोकधर्मी नाट्य-परंपरा की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए लोकधर्मिता तथा लोकधर्मी नाट्य और नाट्य-धर्मी के बीच अंतर स्पष्ट किया गया है। इसके साथ ही लोकधर्मी नाट्य-परमरा की ऐतिहासिक पड़ताल करते हुए उसकी वर्तमान स्थितियों का भी अध्ययन किया गया है । लोकधर्मी नाटककार भिखारी ठाकुर के जीवन को तत्कालीन परिदृश्य में देखने की कोशिश की गई है और इस प्रश्न को खोजने का भी प्रयास किया गया है कि उनके सृजनकर्म की लोकधर्मिता नाट्य-प्रस्तुतियों के प्रयोग में कितनी सफल हुई और कैसे वे लोकप्रियता के शिखर पर चढ़ते गए। इसमें भोजपुरी समाज की नारियों के गुणों-दुर्गुणों, विडम्बनाओं की पड़ताल की गई है, जिन्हें भिखारी ठाकुर ने अपने नाट्य-साहित्य का विषय-वस्तु बनाया है । साथ ही इसमें भिखारी ठाकुर के नाट्य-साहित्य में नारी-जीवन का अध्ययन किया गया है। भिखारी ठाकुर ने भोजपुरी समाज की जिन नारियों के गुणों-दुर्गुणों, विडम्बनाओं, उत्पीड़न व समस्याओं का चित्रण किया है, उसी का इसमें अध्ययन किया गया है। भिखारी ठाकुर के नाट्य-साहित्य का शिल्प-विधान को लेकर यह जानने की कोशिश की गई है कि भिखारी ठाकुर ने अपने नाट्य-साहित्य में कहां से किन नाट्य-शिल्प तत्वों को ग्रहण किया है और सजग प्रयोग करके एक नये शिल्प को आकार दिया है और भाषा को एक नया तेवर व सम्मान दिया है ।

विषय सूची

1. लोकधर्मी नाट्य-परंपरा 2. लोकधर्मी नाटककार : भिखारी ठाकुर 3. भिखारी ठाकुर का भोजपुरी समाज : संस्कृति और जीवन 4. भिखारी ठाकुर के नाट्य-साहित्य में नारी-जीवन 5. भिखारी ठाकुर के नाट्य-साहित्य का शिल्प-विधान 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची ।

212. पूरन चन्द

निर्गुण साहित्य की आलोचना : ऐतिहासिक और समसामयिक सन्दर्भ ।

निर्देशक : प्रो. अजय तिवारी

Th 16363

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में निर्गुण साहित्य पर किए शोध परक कार्यों, मध्यकालीन समाज की सामाजिक-आर्थिक संरचना से सम्बन्धित शोध कार्यों, विभिन्न सामाजिक श्रेणियों से जुड़े निर्गुण कवियों और उनकी रचनाओं का समाज वैज्ञानिक अध्ययन तथा निर्गुण साहित्य का साहित्यिक विवेचन है । यह निर्गुण साहित्य के अवधारणात्मक पहलुओं व ऐतिहासिक अध्ययनों की प्रकृति के विभिन्न नजरियों की छानबीन करके समकालीन सन्दर्भों में इस साहित्य की प्रासंगिकता तय करते हुए समसामयिक सन्दर्भों के नए प्रश्नों के अनुकूल नई अध्ययन दृष्टि विकसित करने का प्रयास करता है । इसमें हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखकों के नजरियों को इतिहास के क्षेत्र में हुए नए शोध कार्यों के परिप्रेक्ष्य में देखा गया है। यह निर्गुण साहित्य की आलोचनात्मक कसौटियों के बने-बनाए सांचों की असमर्थता को उजागर करता है । निर्गुण-सगुण, ज्ञानमार्ग-प्रेममार्ग आदि बंटवारों के कारण समकालीन आलोचना में पनपते दलितवाद बनाम ब्राह्मणवाद पर आधारित की आलोचना की सीमाओं को उजागर करते हुए निर्गुण भक्ति के तत्कालीन और समकालीन अन्तर्विरोधों को तथ्यों पर आधारित सही तर्कों की मदद से दूर करने का प्रयास करता है । यह कलात्मक मूल्यांकन के शास्त्रीय पैमानों से हटकर लोक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर खड़े साहित्य का मूल्यांकन लोक के सन्दर्भ में करता है । प्रतीक योजना, काव्यरूप, छन्द और भाषा के लोक पर आधारित पैमानों को बदलते सामाजिक परिदृश्य में मूल्यांकन के नए पैमानों से परखने का प्रयास करता है ।

विषय सूची

1. निर्गुण साहित्य सम्बन्धी शोध सामग्री 2. निर्गुण साहित्य सम्बन्धी अवधारणात्मक समस्याएं 3. निर्गुण साहित्य की आलोाचना : ऐतिहासिक समस्याएं 4. निर्गुण साहित्य की आलोचनात्मक कसौटियां 5. निर्गुण साहित्य में कला सम्बन्धी समस्याएं 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

213. भारती

शानी के कथा-साहित्य में समाज-बोध ।

निर्देशिका : डॉ. मालती

Th 16357

सारांश

जनवादी चेतना के कथाकार गुलशेर अहमद खां 'शानी' स्वातंत्र्योत्तर कथा-साहित्य में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । 'गुलशेर अहमद खां' 'शानी' मुस्लिम समाज से जुडे हैं और उनका यह उपनाम शानी जहां एक ओर उनके जीवन की विडंबनाओं एवं त्रासदियों के मनोविज्ञान का खुलासा करता है वहीं दूसरी ओर यह उपनाम उन्हें एक आम हिंदुस्तानी की पहचान भी प्रदान करता है उनकी यह पहचान उनके समग्र कथा-साहित्य में बराबर दिखाइ देती है । शानी ने अपने कथा-साहित्य के परिवेश को स्वयं जिया है यही कारण है कि उनके कथा-साहित्य का आलंबन अंचल से लेकर व्यापक समसामयिक समाज-बोध बनाता है । प्रस्ततु शोध प्रबंध में समाज-बोध की परिभाषा देते हुए उसकी भूमिका को स्पष्ट किया गया है । साठ के दशक के साहित्य-परिदृश्य में शानी की भूमिका की तलाश की गई है। साथ ही शानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पूर्ण प्रकाश डाला गया है । 'गुलशेर अहमद खां' के गुलशेर अहमद खां शानी बनने की पूरी प्रक्रिया को उनके कथा-साहित्य में उतरे उनके जीवन-संघर्ष के माध्यम से समझने की कोशिश की गई है । शानी के कथा-साहित्य में मुस्लिम समाज-बोध का अध्ययन प्रस्तुत करते हुए मुस्लिम समाज के परिवार, विवाह, स्त्री पुरूष संबंध आदि का खुलासा लोकरीतियों, लोकाचारो, लोक-प्रथाओं के संदर्भों में किया गया है । शानी के कथा-साहित्य में व्यक्त आदिवासी समाज-बोध का आकलन किया गया है । शानी के कथा-साहित्य में व्यक्त महानगरीय समाज का अध्ययन किया गया है । इसमें शानी के कथा-साहित्य में

व्यक्त शिल्प और भाषा की परीक्षा की गई है । कथावस्तु,पात्र, चरित्र-चित्रण वातावरण एवं शिल्प में प्रस्तुत भाषा-शैली की विभिन्न विधियों द्वारा शानी के कथा-साहित्य को परखा गया है ।

विषय सूची

1.समाज बोध : अर्थ अवधारणा 2.गुलशेर अहमद खां 'शानी' : व्यक्तित्व एवं कृतित्व 3. शानी के कथा-साहित्य में मुस्लिम समाज-बोध 4. शानी के कथा-साहित्य में आदिवासी समाज बोध 5. शानी के कथा-साहित्य में महानगरीय समाज-बोध 6. शानी का कथा-साहित्य एवं शिल्प 7. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची।

214. भारती

स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यासों में जनजातीय जीवन ।

निर्देशिका : डॉ. रेखा अवस्थी

Th 16353

सारांश

जनजातीय विकास के मूलभूत उद्देश्यों के संबंध में विद्वानों में मतभेद रहा है । इस संबंध में एक ओर वह लोग हैं जो उन्हें अपने परम्परागत जीवन के अनुसार जीवन-यापन करते रहने के लिए उन्हें अलग-थलग रहने की पेशकश करते है । इसके लिए वह तर्क देते हैं कि राष्ट्र के किसी बहुसंख्यक समाज को छोटे सरल समाजों पर अपनी व्यवस्था लादने का अधिकार मानवीय नियमों के विरूद्ध है । शोध प्रबंध में अनेक अध्ययनों के विवेचन के उपरान्त यह मानना है कि उनकी सांस्कृतिक धरोहर को बचाते हुए हमारी सरकार को मध्यम मार्ग अपनाना होगा क्योंकि जो स्वतंत्रता उन्हें चुनने की छूट नहीं दे सकती, वह उनके लिए बेमानी है। जनजातीय जीवन की औपन्यासिक वस्तु का निर्माण उनके जीवन की दुर्बलताओं-सबलताओं के साथ-साथ उनकी आज की सोच तथा उनकी परम्परागत संस्कृति के बीच द्वंद्व से होता है । मैला आंचल, कब तक पुकारूं, जंगल के फूल, गगन घटा घहरानी, सीता, मौसी, धार, जंगल जहां शुरू होता है, उत्तर बांया है, अल्मा कबूतरी, शैलूष, काला पादरी आदि उपन्यासों में जनजातीय जीवन की विभिन्न स्थितिओं को अनेक उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

विषय सूची

1. जनजातीय जीवन स्वरूप और समस्याएं 2. औपन्यासिक वस्तु और जनजातीय जीवन 3. जनजातीय जीवन संबंधी उपन्यासों में विद्रोह का स्वर 4. जनजातीय उपन्यासों में प्रकृति और संस्कृति 5. जनजातीय जीवन संबंधी उपन्यास और लेखकीय दृष्टिकोण 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

215. मंगलो रानी

हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में नारी चेतना ।

निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह

Th 16362

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में नारी चेतना संपन्न हिंदी उपन्यासों को केंद्र में रखते हुए नारी जीवन से संबंधित समस्त समस्याओं को देखने की कोशिश की गई हैं इस शोध के अंतर्गत इस बात को प्राथमिकता दी गई है कि नारी अपनी हैसियत तथा पहचान किस तरह हासिल करती है और किस तरह पुरूष मानसिकता के दो फाड करते हुए नई रचनात्मक चेतना अर्जित करती है । यही नई रचनात्मक चेतना ही उसे आगे बढ़ने के लिए दिशा सुलभ कराती है । आंचलिक व गैर-आंचलिक उपन्यासों को केंद्र में रखते हुए उसमें चित्रित नारी समस्याओं पर विचार किया गया है । इसमें चेतना के ऐतिहासिक विकास क्रम को दिखलाते हुए आधुनिक काल में नारी के स्वरूप का मूल्यांकन किया गया है । आंचलिकता और आंचलिक उपन्यास शीर्षक के अंतर्गत आंचलिकता का अर्थ और अभिप्राय विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं और लक्षणों के साथ स्पष्ट किया गया है । हिंदी के आंचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याओं पर विचार किया गया है । इसमें स्त्री केंद्रित उपन्यासों की चर्चा की गई है । जहां स्त्री भारतीय समाज में प्रचलित जड़ मानसिकताओं और समस्याओं को खारिज करते हुए दिखलाई गई हैं । नारी चेतना के विकास में आंचलिक उपन्यासों की भूमिका पर विचार किया गया है । इस शोध-प्रबंध के अंतर्गत नारी-चेतना के रचनात्मक विकास और उसकी दिशा सापेक्षता की भागीदारी पर विचार किया गया है ।

विषय सूची

1. नारी चेतना का विकास 2. आंचलिकता और आंचलिक उपन्यास 3. हिन्दी के प्रमुख आंचलिक उपन्यासों में चित्रित नारी समस्याएं 4. स्त्री केंद्रित हिन्दी उपन्यास और आंचलिक उपन्यासों के नारी चरित्र : एक तुलना 5. नारी चेतना के विकास में हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों की भूमिका 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची।

216. मान (नीलम)

मनोविश्लेषणवाद और समकालीन हिन्दी नाटक ।

निर्देशिका : डॉ. शशि सरदाना

Th 16365

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में मनोविश्लेषण के सैद्धांतिक स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मनोविश्लेषण की अवधारणा को व्याख्यायित किया गया है । इसमें समकालीन स्वरूप और परिस्थितियों को स्पष्ट करते हुए साहित्य और समकालीनता का अर्थ बताकर हिन्दी साहित्य ओर मनोविश्लेषणवाद का संबंध निरूपण किया गया है । द्वंद्व के स्वरूप को परिभाषित करते हुए आंतरिक द्वंद्व और साहित्य का संबंध दिखाया गया है । स्वतंत्रतापूर्व, स्वातंत्र्योत्तर एवं समाकलीन नाटाकें में वर्तमान मानव की द्वंद्वमयी स्थिति को साकार रूप प्रदान किया गया है । द्वंद्व से मानव जाति के बढ़ते आक्रोश और विद्रोह को स्पष्ट करने की कोशिश की गई है । फ्रायड की 'काम संबंधी' अवधारणा को स्पष्ट करते हुए हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में काम की महत्ता को प्रतिपादित करके विभिन्न विद्वानों के काम-संबंधी मतों को प्रस्तुत किया गया है। फ्रायड के अचेतन सिद्धांत के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए आलोच्य समकालीन रचनाओ में इसके स्वरूप को उद्‌घाटित करने का प्रयास किया गया है। अचेतन मन की कुंठाओं से व्यक्तित्व के ह्रास एवं पतन को भी दर्शाया गया है।

विषय सूची

1. मनोविश्लेषण का सवरूप : सैद्धांतिक आधार 2. समकालीन स्वरूप और परिस्थितियां 3. समकालीन नाटकों के पात्रों में आंतरिक द्वंद्व की स्थिति 4. काम

का स्वरूप और आलोच्य हिन्दी नाटक 5. अचेतन सिद्धांत का स्वरूप और आलोच्य नाटक 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

217. मिश्र (अरविन्द कुमार)

रीतिमुक्त काव्य और छायावाद का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : प्रो. हरिमोहन शर्मा

Th 16524

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में छायावादी काव्य पर इतिहासकारों आलोचकों तथा छायावादी कवियों के वक्तव्यों के आलोक में विचार किया गया है । अन्तर्वस्तु के स्तर पर रीतिमुक्त कविता और छायावादी कविता का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । रीतिमुक्त कवियों में (विशेषकर घनानंद) द्वारा भाषा के रचनात्मक रूप की प्रतिष्ठा तथा पूर्ववर्ती कवियों से उनके भाषा प्रयोग की भिन्नता के साथ छायावादी कवियों द्वारा किये गए प्रयास तथा द्विवेदीयुगीन कवियों से उनकी भिन्नता को रेखांकित किया गया है । अन्तर्वस्तु और भाषा दोनों संदर्भ में रीतिमुक्त काव्य और छायावादी काव्य में निहित आन्तरिक एकता के बिन्दु की पहचान की गई है ।

विषय सूची

1. रीतिमुक्त काव्यधारा 2. छायावादी काव्य 3. अन्तर्वस्तु का स्वरूप 4. काव्यभाषा का स्वरूप और उसकी विशेषता 5. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

218. यादव (गीता)

मोहन राकेश के साहित्य पर अस्तित्ववाद का प्रभाव ।

निर्देशक : प्रो. रमेश गौतम

Th 16369

सारांश

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी साहित्य में मोहन राकेश का नाम कहानी और नाटक के क्षेत्र

में अपनी विशेष उपस्थिति दर्ज कराने में सफल रहा है। निजी अनुभवों की अभिव्यक्ति तथा प्रयोगधर्मिता के कारण मोहन राकेश का साहित्य अपने समाकलीन लेखन में काफी चर्चित रहा । हिन्दी नाटक जगत में मोहन राकेश के सभी नाटक विशेष उपलब्धि माने गए है। प्रस्तुत शोध प्रबंध के अंतर्गत अस्तित्ववादी चिंतन की सामाजिक, राजनैतिक, दार्शनिक एवं साहित्यिक पृष्ठभूमि पर विचार करते हुए उसके उद्‌भव एवं विकास के कारणों व परिस्थितियों को जानने व समझने की कोशिश की गई है । भारतीय परिवेश में अस्तित्ववाद के पनपने एवं विकसित होने के कारणों की पड़ताल की गई है । भारतीय परिवेश में उपजे अस्तित्ववाद का हिन्दी साहित्य पर क्या और कितना प्रभाव पड़ा इसका अध्ययन किया गया है । मोहन राकेश के नाटकों पर अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया हे । वस्तुनिष्ठता की अवधारणा, स्वतंत्रता की अवधारणा, स्वतंत्रता की परिस्थितिगत अवधारणा, निरर्थकता-बोध, नहींत्व-बोध, अलगाव की अवधारणा, लघु मानव की अवधारणा इत्यादि के आधार पर राकेश के नाटाकों को जांचने की कोशिश की गई है। मोहन राकेश के उपन्यासों एवं कहानियों को उनके समकालीन साहित्यिक परिवेश में देखते हुए उन पर अस्तित्ववादी चिंतन का प्रभाव देखने की कोशिश की गई है।

विषय सूची

1. अस्तित्ववाद की अवधारणा : उद्‌भव और विकास 2. भारतीय परिवेश में अस्तित्ववाद 3. हिन्दी साहित्य पर अस्तित्ववाद का प्रभाव 4. मोहन राकेश के नाटकों पर अस्तित्ववाद का प्रभाव 5. मोहन राकेश के कथा-साहित्य पर अस्तित्ववाद का प्रभाव 6. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

219. रजनी बाला अनुरागी

कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी परिकल्पना ।

निर्देशक : डॉ. तेज सिंह

Th 16344

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रंबध में नारी-विमर्श के स्वरूप और विकास की क्रमिक पड़ताल की गई है । इसके अंतर्गत नारी-विमर्श की संकल्पना, उसके विभिन्न घटकों का

अवधारणात्मक विश्लेषण किया गया है। भारतीय तथा पाश्चात्य चिंतन परंपरा में, प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी विषयक विभिन्न दृष्टिकोणों का आकलन किया गया है । स्वतंत्रतापूर्व कथा साहित्य तथा उसमें नारी की स्थिति का संक्षेप में अध्ययन किया गया है । इस शोध में कृष्णा सोबती की रचनात्मक कृतियों की विशद विवेचना की गई है इनमें रचनात्मक कथ्य की विशेषता, नारी की स्थिति तथा नियति, नारी स्वातंत्र्य और अस्मिता तथा आधुनिक नारी परिकल्पना पर गहराई से विचार किया गया है । कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी-परिकल्पना का मनोवैज्ञानिक सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन किया गया है । सोबती की साहित्य-भाषा की सर्जना, भाषिक तराश, नए उपमान तथा प्रतीक गढने की प्रक्रिया तथा प्रयासों का भी उल्लेख किया गया है । कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी-परिकल्पना संबंधी निष्कर्षों तथा स्थापनाओं की समाहारमूलक विवेचना की गई है ।

विषय सूची

1.नारी-अवधारणा : स्वरूप तथा विकास 2. कृष्णा सोबती का रचनाकार व्यक्तित्व और युग-परिवेश 3. कृष्णा सोबती के कथा-साहित्य में आधुनिक नारी पात्र 4. कृष्णा सोबती के साहित्य में नारी-परिकल्पना का मनोवैज्ञानिक और सामाजिक दृष्टिकोण से अध्ययन 5. भाषा का सर्जनात्मक स्वरूप 7. उपसंहार । परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

220. राजकुमारी

रामदरश मिश्र के कथा-साहित्य में गाँव ।

निर्देशक : डॉ. कैलाश नारायण तिवारी

Th 16355

सारांश

डॉ. रामदरश मिश्र जी का समस्त साहित्य जीवनानुभवों की देन है । उपन्यास, कहानी, कविता सभी साहित्य विधाएं उनके अनुभवों का प्रतिबिम्ब हैं । जो लिखा है वह केवल उनकी सोच नहीं जिया हुआ यथार्थ है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् गांव का स्वरूप अध्याय में उपन्यास और कहानी के उद्‌भव

व विकास का परिचय दिया गया है । हिन्दी उपन्यास और कहानी का प्रारंभ कब हुआ उसके रूप, उसके अनके नामों का उल्लेख किया गया हे । किस प्रकार कहानी नाम को हिन्दी में स्वीकृति मिली, विद्वानों के मतों द्वारा इसे स्पष्ट किया गया है । इसमें हिन्दी उपन्यासों और कहानियों के सामाजिक, आर्थिक परिवेश को विभिन्न पक्षों के रूप में चित्रित किया गया है । पारिवारिक विखंडन, परिवेश से निर्मित लोगों की मानसिकता, ग्राम्य सभ्यता के साथ जुडे महानगरीय बोध को स्पष्ट किया गया है । इसमें ग्रामीण नारी के परम्परागत रूप एवं समकालीन रूप के साथ मिश्र जी के नारी पात्रों की चर्चा की गई है । पुरूष और नारी के बीच भावनात्मक संबंधों पर विचार किया गया है । इसमें अंधविश्वास, रूढ़ियों, परम्पराओं के दोनों पक्षों का विवेचन किया गया है । ग्रामीण संस्कृति की पहचान लोकगीत, देशकाल वातावरण, प्रकृति आदि भी विचारणीय पक्ष है । इसमें प्रतीक-बिम्ब विधान, भाषा एवं वार्तालाप की भाषा, अंलकारिक सौंदर्य के अलावा, मुहावरें तथा लोकोक्तियों की महत्ता को दर्शाया गया है । इसमें प्रेमचन्द युग से लेकर रामदरशमिश्र तक के युग के गांव के संदर्भों का अध्ययन किया गया है । उसमें लेखकों की विशेष दृष्टि एवं उनके लेखन में आये समयानुसार परिवर्तन को उभारा गया है । प्रेमचन्द, फणीश्वरनाथ रेणु, श्रीलाल शुक्ल, मार्कण्डेय, शिवप्रसाद सिंह आदि कथाकारों के व्यक्तित्व पर तथा उनकी साहित्ययात्रा पर विचार किया गया है । उनके उपन्यासों और कहानियों के विभिन्न संदर्भों की सूक्ष्मता से पड़ताल के पश्चात् रामदरश मिश्र जी की कहानियों और उपन्यासों का विवेचन किया गया है।

विषय सूची

1. स्वतंत्रतापूर्व एवं स्वतंत्रता पश्चात् गांव का स्वरूप 2. भारतीय गांव का परिवर्तित परिवेश एवं आधुनिक परिप्रेक्ष्य 3. रामदरश मिश्र के कथा-साहित्य में आये विभिन्न संदर्भ 4. रामदरश मिश्र के कथा-साहित्य में ग्रामीण समस्याओं और तत्वों का स्वरूप 5.रामदरश मिश्र के उपन्यासों और कहानियों में कलात्मक अभिव्यक्ति 6. रामदरश मिश्र के कथा-साहित्य में प्रस्तुत गांव का तुलनात्मक अध्ययन 7. उपसंहार । साक्षात्कार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

221. राजेश चन्द आदर्श

रूपविज्ञान की दृष्टि से मानक हिन्दी और भोजपूरी का तुलनात्मक अध्ययन।

निर्देशक : डॉ. विमलेश कांति वर्मा

Th 16368

सारांश

मानक हिन्दी और भोजपुरी में समानता के साथ असमानता के बिंदु अधिक हैं । चाहे संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया कोई भी पहलू हो । शब्द-निर्माण की प्रक्रिया में भी यही अंतर दिखाइ पड़ता है । लेकिन इतना सब होते हुए भी आत्मसात करने की प्रवृत्ति दोनों ही भाषाओं में दिखाई पड़ती है । फर्क यही है कि भोजपूरी में उनका भोजपुरीकरण हो जाता है । प्रस्तुत शोध प्रबंध तुलनात्मक अध्ययन की विवेचना करता है तथा उसके आवश्यकता ओर महत्व पर प्रकाश डालता है। शोध में रूप विज्ञाान के विभिन्न आयामों पर विस्तार पूर्वक चर्चा की गई है । इसमें मानक हिन्दी और भोजपुरी भाषा का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें दोनों भाषाओं का संबंध व्याकरणिक रूप, क्रियाएं, उपसर्ग और प्रत्यय, रूप परिवर्तन के कारण शामिल हैं ।

विषय सूची

1. तुलनात्मक अध्ययन 2. रूपविज्ञान : अध्ययन क्षेत्र एवं विस्तार 3. मानक हिन्दी और भोजपुरी 4.हिन्दी और भोजपुरी का भाषाई संबंध 5. मानक हिन्दी ओर भोजपुरी का व्याकरणिक रूप 6. मानक हिन्दी और भोजपुरी की क्रियाएं 7.रूपिम 8. मानक हिन्दी और भोजपुरी के उपसर्ग और प्रत्यय उपसंहार । परिशिष्ट ।

222. राय (काकोली)

संस्कृत और हिन्दी काव्यशास्त्र में अलंकारों का तुलनात्मक अध्ययन ।

निर्देशक : डॉ. प्रेम सिंह

Th 16348

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में अलंकार की अवधारणा और अर्थ का स्पष्टीकरण किया गया है । अलंकार का साहित्य में क्या स्थान है, इसमें संस्कृत काव्यशास्त्रियों के अलंकार चिंतन से लेकर के आधुनिक लेखकों के अलंकार चिंतन को समाहित किया गया है। अलंकार का अन्य काव्यतत्वों के संदर्भ में विवेचन किया गया है । संस्कृत काव्यशास्त्र

मे प्रायः रस, अलंकार, रीति, ध्वनि, वक्रोक्ति तथा औचित्य के आधार पर ही काव्य का लक्षण विवेचन विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया गया है । इसमें हिन्दी काव्यशास्त्र में अलंकार निरूपण की परम्परा को दर्शाया गया है। संस्कृत काव्यशास्त्र के आचार्यों के अलंकार चिंतन और हिन्दी काव्यशास्त्रियों के अलंकार चिंतन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है । इसमें मुख्यतः रीतिकाल के आचार्यों को समाहित किया गया है ।

विषय सूची

1. भूमिका 2. अलंकार अन्य काव्यतत्वों के सन्दर्भ में 3. हिन्दी काव्यशास्त्र में अलंकार निरूपण 4. तुलनात्मक अध्ययन 5. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

223. वर्मा (संगीता)

हरिवंशराय बच्चन की काव्यभाषा ।

निर्देशक : डॉ. मोहन

Th16358

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध हरिवंशराय बच्चन की काव्यभाषा के अध्ययन-अनुशीलन का प्रबंधातमक प्रयास है । बच्चन छायावादोत्तरी काव्याधारा के महत्त्वपूर्ण कवि हैं । बच्चन की काव्यभाषा को इस शोध-प्रबंध में जाँचने, परखने का प्रयास किया गया है। उनके काव्य में भाषा के अनेक रूप, रंग, छटाएँ बिखरी हुई हैं। शोध-प्रबंध में काव्यभाषा से सम्बन्धित ध्वनि, शब्द, व्याकरण, प्रतीक, बिम्ब, काव्यशात्र, व्यावहारिकता, संस्कृत एवं लोकजीवन जैसे पहलुओं को समेटने का प्रयास किया गया है। इसमें काव्यभाषा के सैद्धांतिक पक्ष का विवेचन किया गया है । काव्यभाषा के स्वरूप का विवेचन करते हुए इसके तत्त्वों का विधिवत अध्ययन किया गया है । बच्चन के समय तथा छायावादोत्तर काव्यभाषा संबंधी नवीन चिंतन पर प्रकाश डाला गया हैं । संक्रांति युग की परिस्थितियों एवं मान्यताओं की नवीनता पर विचार करने का प्रयास किया गया है । छायावादोत्तर कवियों के भाषिक मूल्य तथा बच्चन का काव्यभाषा क्षेत्र में मौलिक चिन्तन पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । बच्चन ने अपने

काव्य में ध्वनि-योजना को सदैव महत्व दिया है । इसके दोनों रूपों स्वर एवं व्यंजन का बच्चन ने पूर्णतः निर्वाह किया है और अपनी हृदयग्राही भावनाओं के अनुकूल इनमें परिवर्तन भी किये हैं। बच्चन की काव्यभाषा में व्याकरणिक दृष्टिकोण को परंपरा और प्रयोग के संदर्भ में देखा गया है । संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय, वाक्य-रचना, क्रिया-रूप इत्यादि का बच्चन ने भावों की सघनता के अनुसार प्रयोग किया है । प्रतीकों का बच्चन ने नवीन प्रयोग किया है । बच्चन काव्य के प्रतीकों का अध्ययन करने के लिए उन्हें मधु-प्रतीक, दार्शनिक प्रतीक, प्रेम प्रतीक, मनोवैज्ञानिक प्रतीक, सांस्कृतिक प्रतीक, प्रकृति प्रतीक, नारी प्रतीक इत्यादि में विभक्त किया गया है। अलंकार, शब्दशक्ति, छंद, रस विषयक अवधारणाओं का बच्चन की मौलिक अवधारणाओं के अनुसार अध्ययन किया गया है । व्यावहारिक अध्ययन में बच्चन की काव्यगत-शैली का परीक्षण है । साथ ही मुहावरे, लोकोक्तियों का भी सविस्तार उल्लेख किया गया है। संस्कृति एवं लोकजीवन से जुडी शब्दावली तथा लोकगीत में बच्चन की भारतीय संस्कृति से जुडी अनन्य आस्था, श्रद्धा को खोजने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. काव्यभाषा का स्वरूप 2. बच्चनयुगीन काव्यभाषा : चिंतन के नवीन आयाम 3. ध्वनि योजना एवं शब्दराशि का विवेचन 4. व्याकरणिक विवेचन 5. प्रतीक एवं बिम्बों का विवेचन 6. काव्यशास्त्रीय एवं व्यावहारिक विवेचन 7. संस्कृति और लोकजीवन से जुडी शब्दावली तथा लोकगीत । 8. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

224. शर्मा (करुणा देवी)

कमलेश्वर के कथा-सहित्य मे स्त्री-विमर्श ।

निर्देशक : डॉ. पूरन चन्द टण्डन

Th 16366

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में वैदिक काल से उत्तर वेदिक काल, रामायण एवं महाभारत काल तथा ऐतिहासिक मध्यकाल तक आते-आते स्त्री की स्थिति पर विचार करने के बाद स्वतंत्रता के बाद अब तक स्त्री की स्थिति में क्या परिवर्तन आया है, उसके सुधार के लिए क्या उपाय किये गये हैं और क्या किये जाने चाहिए आदि पर गहन चिन्तन

किया गया है । स्त्री-विमर्श का स्वरूप स्पष्ट करने के पश्चात् अवधारणा के अन्तर्गत मेरी बोल्स्टन क्राफ्ट, जे.एस. मिल., एंगेल्स बेट्टी फ्राइडन, सीमोन द वोउवार, कैट मिलेट, सुलामिथ फायरस्टोन, जर्मन गीयर के विचारों को स्पष्ट किया गया है और भारतीय अवधारणा में एक अज्ञात हिन्दू औरत, महादेवी वर्मा, आशारानी व्होरा, मृणाल पाण्डे, क्षमा शर्मा, अनामिका, रमणिका गुप्ता, सरला माहेश्वरी, प्रभा खेतान, मृदुला सिन्हा के विचारों को आधार बनाया गया है । भारतीय स्त्री समाज के समकालीन परिदृश्य को विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत स्पष्ट किया गया है । प्रेमचन्द पूर्व युग, प्रेमचन्दोत्तर युग के प्रमुख कथा साहित्याकरों के कथा साहित्य में पाये जाने वाले स्त्री-विमर्श को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । कमलेश्वर के उपन्यासों का स्त्री-विमर्श के सन्दर्भ में गम्भीरतापूर्वक अध्ययन, चिन्तन एवं मनन करके उनके बहुआयामी स्त्री-विमर्श को स्पष्ट किया गया है । कमलेश्वर की कहानियों में स्त्री-विमर्श का मूल्यांकन विविध पक्षों को ध्यान में रखते हुए किया गया है । अन्य कथा साहित्यकारों के स्त्री-विमर्श के साथ कमलेश्वर के स्त्री-विमर्श की निष्पक्ष तुलना करने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. भारतीय चिन्तन परमपरा में स्त्री 2. स्त्री-विमर्श : स्वरूप एवं अवधारणा 3.भारतीय स्त्री-समाजः समकालीन परिदृश्य 4. हिन्दी कथा सहित्य में स्त्री-विमर्श 5. कमलेश्वर के उपन्यासों में स्त्री-विमर्श 6. कमलेश्वर की कहानियों में स्त्री-विमर्श 7. अन्य कथा साहित्यकार एवं कमलेश्वर 8. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

225. सरिता

नवगीत की प्रगतिशील चेतना और रमेश रंजक का काव्य ।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th16370

सारांश

रमेश रंजक ने नवगीत को न केवल रचना के आधार पर समृद्ध किया बल्कि इसके सैद्धांतिक आधार को पुष्ट करने के लिए भी लम्बा संघर्ष किया । उनकी नये गीत का उद्‌भव और विकास पुस्तक न केवल नये गीत के स्वरूप को स्पष्ट करती है

बल्कि भारतीय साहित्य परम्परा में प्रवाहित प्रगतिशीलता के संदर्भ में गीत-परम्परा को जीवन के नए संदर्भों में व्याख्यायित भी करती है । प्रस्तुत शोध प्रबंध में प्रगति शब्द को स्पष्ट करते हुए प्रगतिशीलता के स्वरूप प्रगतिवादी और प्रगतिशील विचारधारा में अन्तर और आधुनिक हिन्दी कविता में प्रगतिशील तत्त्वों के विकास एवं उनकी विशेषताओं का वर्णन किया गया है । इसमें नवगीत की आधारीय पृष्ठभूमि, स्थापना के लिए रचनात्मक और समीक्षात्मक संघर्ष, गीत के नए आयाम, नवगीत के प्रवर्तक गीतकार और उसके प्रगतिशील संदर्भों का परिचय दिया गया है । नवगीत में अनुभूति और अभिव्यक्ति की दृष्टि से हुए परिवर्तनों पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई है । इसमें रमेश रंजक का सामान्य, व्यक्तित्व की विशेषताएं, रचनात्मक और समीक्षात्मक अनुभव का वर्णन किया गया है । रमेश रंजक की समष्टि-उन्मखी चेतना से संबंधित गीतों की विषय-वस्तु का अध्ययन किया गया है । रमेश रजंक के काव्य की प्रगतिशीलता के संदर्भ में भाषागत परिवर्तन का विश्लेषण किया गया है साथ ही उनके काव्य में विद्यमान अप्रस्तुत-विधान, बिम्ब-विधान, प्रतीक, छंद, गीतों के आकार, गेयता एवं गायन-शैली में प्रयोग संबंधी पक्षों के वैशिष्ट्य की चर्चा की गई है ।

विषय सूची

1. प्रगतिशीलता : अवधारणा एवं स्वरूप 2. नवगीत का स्वरूप, उद्‌भव-विकास एवं उसकी प्रगतिशीलता 3. रमेश रंजक : जीवन एवं रचना-कर्म 4. नवगीत की प्रगतिशील चेतना के संदर्भ में रमेश रंजक के काव्य का विषय-सापेक्ष अध्ययन 5. नवगीत की प्रगतिशील चेतना के संदर्भ में रमेश रंजक के काव्य का शिल्प-सापेक्ष अध्ययन 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

226. सरिता

रीति-कालीन रीति-भिन्न काव्य में सामाजिक दृष्टि ।

निर्देशक : डॉ. मुकेश गर्ग

Th 16371

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में समाजिक दृष्टि के अर्थ को स्पष्ट करते हुए साहित्य से समाज के सम्बन्ध को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । साहित्यकार की सामाजिक दृष्टि

और रचना के अस्तित्व की पारस्परिकता पर विचार किया गया है । 'रीति-भिन्न' का अर्थ स्पष्ट करते हुए रीति-कालीन सामाजिक परिस्थितियो का आकलन किया गया है । साथ ही रीति-भिन्न काव्य की विषयपरक गणना की गई है । रीति-भिन्न काव्य में व्यक्त कवियों की सामाजिक दृष्टि के सामाजिक-सांस्कृतिक पक्षों को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । तत्कालीन समाज में लोगों के रहन-सहन, खान-पान, तीज-तयोहारों का जो वर्णन रीति-भिन्न काव्य में मिलता है, उसका उल्लेख किया गया है । रीति-भिन्न कवियों की सामाजिक दृष्टि के आर्थिक एवं राजनीतिक पक्षों को स्पष्ट किया गया है । रीति-कालीन सामज में प्रचलित बाजार व्यवस्था एवं शासन व्यवस्था के विविध पहलुओं के संदर्भ में रीति-भिन्न काव्य में व्यक्त सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है । काव्य में अभिव्यक्त सामाजिक दृष्टि के दार्शनिक पक्ष को विवेचित किया गया है । इसमें ब्रह्म, जीव, जगत एवं माया संबंधी रीति-भिन्न कवियों के विचार प्रस्तुत हुए हैं । रीति-भिन्न कवियों की भक्ति भावना में उभरते सामाजिक उत्थान के स्वर को भी स्पष्ट किया गया है ।

विषय सूची

1. सामाजिक दृष्टि और साहित्य से उसका सम्बन्ध 2. युगीन परिस्थितियों और रीति-भिन्न काव्य 3.रीति-कालीन रीति-भिन्न काव्य में व्यक्त सामाजिक दृष्टि : सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष 4. रीति-कालीन रीति-भिन्न काव्य में व्यक्त सामाजिक दृष्टि : राजनीतिक-आर्थिक पक्ष 5. रीति-कालीन रीति-भिन्न काव्य में व्यक्त सामाजिक दृष्टि : दार्शनिक पक्ष 6. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

227. सुमन कुमारी

स्त्री विमर्श में शक्ति की अवधारणा और मंजुल भगत का कथा-साहित्य।

निर्देशिका : डॉ. वीणा अग्रवाल

Th 16346

सारांश

शोध-प्रबंध में स्त्री विमर्श, स्त्रीवाद, स्त्रीत्ववाद, स्त्री साहित्य, स्त्रीत्ववादी साहित्य , स्त्री दृष्टि आदि को स्पष्ट करते हुए स्त्री समाज, संस्कृति और विचारधारा में समाज

में स्त्री का महत्त्व तथा वैदिक काल से आधुनिक काल तक स्त्री की स्थिति पर प्रकाश डाला गया है । स्त्री विमर्श का समाजशास्त्र में स्त्री विमर्श की जैविक, मनोवैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सांवैधानिक/राजनैतिक, आर्थिक आदि आधारों से अंतर्संबंध की पड़ताल की गई है । स्त्री-स्वातंत्र्य, स्त्री मुक्ति आंदोलन आदि का अर्थ स्पष्ट किया गया है । मंजुल की बहन मुदुला गर्ग के लेखों, बेटी पूनम भगत तथा स्व. श्री ललित मोहन भगत से हुई बातचीत के आधार पर मंजुल की शिक्षा दीक्षा, वैवाहिक जीवन आदि का वर्णन करते हुए तद्युगीन राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश की जानकारी दी गई है तथा मंजुल की कहानियों एवं उपन्यासों का परिचय दिया गया है । इसमें मंजुल भगत के कथा साहित्य में स्त्री के विविध रूप को स्पष्ट करते हुए मंजुल के कथा साहित्य में स्त्री के माँ, पत्नी, बुजुर्ग, बेबेजी आदि रूपों का परिचय दिया गया है । स्वतंत्र्योत्तर काल में बदलती परिस्थितियों के परिणामस्वरूप स्त्री पुरुष संबंधों में आया परिवर्तन तथा मंजुल भगत के स्त्री/स्त्री विमर्श विषयक विचारों की जानकारी दी गई है ।

विषय सूची

1. स्त्री विमर्श की अवधारणा 2. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री स्वातंत्र्य 3. समकालीन महिला कथाकारों के सापेक्ष में मंजुल भगत की स्त्री 4. मंजुल भगत के कथा-साहित्य में स्त्री के विविध रूप 5. मंजुल भगत के स्त्री विमर्श में शक्ति की अवधारणा आधुनिक समाज व्यवस्था में बदलते स्त्री-पुरुष संबंध 6. उपसंहार। परिशिष्ट । संदर्भ ग्रंथ सूची ।

228. सुरेन्द्र कुमार
'हिन्दी प्रदीप' और नवजागरण ।
निर्देशक : प्रो. गोपेश्वर सिंह
Th 16345

सारांश

शोध प्रबंध के अंतर्गत नवजागरण की अवधारणा को व्याख्यायित किया गया है ऐसा करते हुए यूरोपीय रिनेसां की परिस्थितियों और प्रवृत्तियों का उल्लेख किया गया है

तथा रिनेसां, पुनर्जागरण और नवजागरण आदि शब्दों के अंतर को स्पष्ट करते हुए नवजागरण की विशेषताओं के संदर्भ में उनकी सार्थकता बतायी गई है । हिन्दी पत्रकारिता के विकास की चर्चा विभिन्न परिस्थितियों के परिप्रेक्ष्य में की गई है । तत्पश्चात् सांस्कृतिक विकास, साम्रज्यवाद तथा रूढ़िवाद विरोध में उसकी भूमिका को रेखांकित करते हुए हिन्दी गद्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता के महत्त्व का अंकन किया गया है । इसमें पं. बालकृष्ण भट्ट और उनके पत्र 'हिन्दी प्रदीप' का संक्षिप्त परिचय दिया गया है । सांस्कृतिक विकास को दर्शाते हुए तत्कालीन समाज सुधारकों और उनकी संस्थाओ का संक्षिप्त ब्यौरा दिया गया है तत्पश्चात् हिन्दी प्रदीप का सांस्कृतिक विकास में क्या योगदान रहा, इसका वर्णन किया गया है । गद्य की आरम्भिक स्थिति विभिन्न लेखक और उनका गद्य (भरतेन्दु युग से पूर्व) तथा भारतेन्दु युगीन गद्य का स्वरूप, तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं के अन्तर्गत गद्यके विकास की चर्चा की गई है ।

विषय सूची

1. नवजागरण : अर्थ और स्वरूप 2. हिन्दी पत्रकारिता और नवजागरण 3. हिन्दी प्रदीप और नवजागरण 4. हिन्दी प्रदीप और सांस्कृतिक विकास की समस्या 5. हिन्दी प्रदीप और गद्य के विकास की समस्या 7. उपसंहार । संदर्भ ग्रंथ सूची।

229. सुरैया ख़ान

चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में यथार्थ-बोध ।

निर्देशिका : डॉ. कुमुद शर्मा

Th 16343

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में यथार्थ शब्द की उत्पत्ति तथा यथार्थ-बोध पर प्रकाश डाला गया है । इसी के साथ यथार्थ और यथार्थवाद की अवधारणा को लिया गया है । यथार्थवाद संबंधी विभिन्न मतों और उनकी आलोचना के अंतर्गत आदर्श, कल्पना, अतियथार्थवाद और रोमांस पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है । हिन्दी उपन्यासों में यथार्थ-बोध पर प्रकाश डाला गया है । इसमें चित्रा मुद्गल के व्यक्तित्व का सामान्य परिचय के साथ उनके उपन्यासों में यथार्थ-बोध पर विस्तार से चर्चा की गई है ।

लेखिका के उपन्यासों में मनावैज्ञानिक यथार्थ-बोध, सामाजिक यथार्थ-बोध पर चर्चाकी गई है। साथ ही चित्रा मुद्गल की कहानियों में यथार्थ-बोध पर प्रकाश डाला गया है। शोध प्रबंध में चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में भाषा के माध्यम से होने वाले यथार्थ-चित्रण पर प्रकाश डाला गया है जिसमें यथार्थ को खोलकर रखने वाले शब्दों, वाक्यों, नए प्रतीकों, मुहावरों आदि पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है ।

विषय सूची

1. यथार्थ की अवधारणा एवं चिंतन 2. साहित्य और यथार्थ-बोध : विशेषतः कथा-साहित्य के संदर्भ में 3. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में यथार्थ-बोध 4. चित्रा मुद्गल के कथा-साहित्य में भाषा और यथार्थ 5. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।

230. सेठ (संजय कुमार)

हिन्दी दलित साहित्य की आत्मकथाओं में अस्मिता की अवधारणा ।

निर्देशिका : डॉ. प्रेम सिंह

Th 16359

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रबंध में शब्द का अर्थ, परिभाषा एवं सैद्धांतिक पक्षों को स्पष्ट किया गया है। दलित साहित्य की अवधारणा का विकास ऐतिहासिक क्रम में विश्लेषित किया गया है। इसमें हिन्दी साहित्य के आत्मकथा का इतिहास प्रस्तुत किया गया है। इसमें अस्मिता का अर्थ, परिभाषा एवं अस्मिता का साहित्यिक प्रतिफलन कैसे होता है? इन सभी बिन्दुओं की चर्चा की गई है। अस्मिता विमर्श की क्या-क्या सीमाएं हैं और उस विमर्श का दुरुपयोग कैसे होता है ? इस दृष्टि से भी सम्यक् विश्लेषण किया गया है। विभिन्न लेखकों की सृजनात्मक चेतना का सूक्ष्म विवेचन किया गया है । इनमें उनके परि वेश का, उनकी शिक्षा-दीक्षा एवं उनके संघर्षों की जटिलताओं का मूल्यांकन किया गया है । इसमे सामाजिक विश्लेषण, आर्थिक पहलू, धर्म और संस्कृति आधुनिकता के आइने में दलित जीवन और दलित स्त्री का उत्पीडन को केंद्र बनाकर दलित आत्मवृत्तों का गहन विवेचन-विश्लेषण किया गया है ।

विषय सूची

1. हिन्दी दलित साहित्य की अवधारणा 2. हिन्दी आत्मकथा का इतिहास 3.अस्मिताः परिभाषा एवं स्वरूप 4. प्रतिनिधि दलित आत्मकथाएं 5. दलित आत्मकथाओं में अभिव्यक्त समाज एवं संस्कृति 6. उपसंहार। संदर्भ ग्रंथ सूची।